International Referred Research Journal ISSN- 0974-2832 VoL.II *ISSUE -18, July,2010

शोध पत्र- राजनीति विज्ञान

अहिंसा की गाँधीय अवधारणा समसामयिक प्रासंगिकता

* डॉ. अमिता वर्मा ** डॉ. राजेश सिन्हा

* आर. एल. सहरिया राजकीय स्नातकोतर महाविद्यालय, कालाडेरा, जयपुर
** राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

July, 2010

महात्मा गांधी का राजनीतिक व सामाजिक चिन्तन, चिन्तन के परम्परागत वर्गीकरणों से परे है। गांधी का समस्त चिन्तन उनकी आध्यात्मिक आस्थाओं का परिणाम है, आध्यात्मिक आस्थाएँ ही वस्तुतः उनके चिन्तन को एक विशिष्ट स्तर प्रदान करती है। गांधी ने किसी विशिष्ट विचारधारा का प्रवर्तन नहीं किया, अपितु उन्होंने एक न्यायनिष्ठ समाज की स्थापना के लिए धारणाओं और विचारों की एक समग्र योजना प्रस्तुत की है। गांधी के चिन्तन के विश्लेषण के क्रम में यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि उन्होंने स्वयं किसी विचार या प्रस्थापनाओं के अन्ततः सत्य होने का दावा नहीं किया। उनका समग्र दर्शन, उनके स्वयं के विनम्र अभिमत में, सत्य के अनुसंधान की प्रक्रिया के विभिन्न चरणों में निर्धारित हुआ है। गांधी की नैतिक, सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक संकल्पनाओं के मूल में अहिंसा का विचार केन्द्रीय प्रेरणा के रूप में अर्न्तग्रस्त है।

स्थूल और परम्परागत अर्थ में अहिंसा एक नकारात्मक शब्द है, जिसका अर्थ है 'हिंसा न करना' अथवा 'हिंसा का अभाव'। किन्तु गांधी जी अहिंसा के नकारात्मक अर्थ को अपूर्ण मानते है। उन्होंने अहिंसा के नकारात्मक और सकारात्मक दोनों पक्षों पर बल दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि अहिंसा का मर्म किसी को क्षति न पहुचाने की स्थूल व भौतिक क्रिया की अपेक्षा, इस क्रिया के पीछे विद्यमान मन्तव्य में निहित है। इस प्रकार नकारात्मक या निषोधात्मक विचार के रूप में अहिंसा का अर्थ है – किसी भी प्राणी को विचार, शब्दों या कार्यों से हानि न पहुँचाना। किन्तु यह नकारात्मक अर्थ तभी पूर्ण होता है, जबकि इसके मूल में इस नियम की सकारात्मक प्रेरणा–प्राणी मात्र के प्रति निरपवाद प्रेम आवश्यक रूप से विद्यमान हो। गांधी के अनुसार अहिंसा शारीरिक नहीं वरन आध्यात्मिक शक्ति है और दुर्बल शरीर वाला व्यक्ति भी इस शक्ति का विकास कर सकता है।1/

उन्होंने स्पष्ट किया कि अपने मित्रों और संबंधियों से प्रेम करना तो सहज भाव है। सच्चा अहिंसक दृष्टिकोण यह हैं, जो व्यक्ति का अपने विरोधियों और शत्रुओं से भी प्रेम करने के लिये प्रेरित करे। उन्होंने कहा अहिंसा उस व्यक्ति के प्रति प्रेम, संवेदना और सेवा के भाव में निहित है जिसे घृणा करने के लिये कारण उपस्थित हों। ऐसे व्यक्ति के प्रति प्रेम करने में, जो हमें प्रेम करता है, अहिंसा निहित नहीं है, अपितु यह तो स्वाभाविक नियम है ''अहिंसा और घृणा दोनों हमारे हृदय में साथ–साथ नहीं रह सकते।''2/ गांधी के अनुसार सच्ची अहिंसा वह है जो निःस्वार्थ और निरपेक्ष हो। गांधी के लिए अहिंसा, आस्था व निष्ठा का विषय है, कोई व्यावहारिक नीति नहीं हैं। नीति व्यक्ति के स्वार्थपरक उद्देश्य की पूर्ति के लिये परिवर्तित की जा सकती हैं। किन्तु एक नैतिक आस्था के रूप में अहिंसा के प्रति समर्पित व्यक्ति की अहिंसा के प्रति आस्था किसी भी कठिन परिस्थिति में अडिग रहती हैं। गांधी के अनुसार अहिंसा मानव के प्रति आस्था से पूरी तरह ओत–प्रोत हैं।3/

गांधी अहिंसा में कायरता के लिए कोई स्थान नहीं हैं। अहिंसा एक ऐसा अस्त्र हैं जिसका प्रयोग केवल बहादुरों द्वारा किया जा सकता हैं। गांधी का दृढ़ विश्वास था कि भय और अहिंसा एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत प्रवृत्तियाँ हैं। अहिंसा सर्वोच्च सद्गुण हैं, कायरता निकृष्टतम दुर्गुण। अहिंसा में कष्ट सहने की तत्परता हैं कायरता में कष्ट पहुँचाने की प्रवृत्ति। पूर्ण अहिंसा सर्वोच्च शौर्य हैं। अहिंसा के अनुयायी को अनिवार्य रूप से अधिक साहस और शौर्य की आवश्यकता होगी। अहिंसा बलवान से बलवान लोगों के लिये है, निर्बलों के लिये नहीं।4/ गांधी का मत हैं कि अहिंसा के साधक के समक्ष केवल एक ही भय होता हैं और वह है ईश्वर का भय। अहिंसा के द्वारा आत्मा और आत्मसमान की रक्षा की जा सकती हैं।5/ अहिंसा निःस्वार्थ हैं। निःस्वार्थ होकर अपने शरीर की चिंता किये बिना सत्य को पहचानना तथा अन्य व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान करना अहिंसा हैं। गांधी ने अहिंसा को ऋणात्मक एवं धनात्मक दोनों ही अर्थों में परखा हैं। उनके अनुसार ऋणात्मक अर्थ में अहिंसा का तात्पर्य शरीर अथवा मन से किसी जीवन को हानि नहीं पहुँचाने से हैं। धनात्मक अर्थ में अहिंसा विस्तृत प्रेम एवं परमार्थ का प्रतीक हैं।

अहिंसा हिंसा से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं अहिंसा का सिद्धान्त राज्यों के पारस्परिक संबंधों में उतना ही कल्याणकारी हैं जितना कि व्यक्ति तथा व्यक्ति के संबंधों में गांधी के अनुसार अहिंसा को केवल वध न करने के अर्थ में नहीं लेना चाहिए। अहिंसा असहयोग का अभिन्न अंग हैं। सत्य तथा अहिंसा कोई प्रतिबन्धित गुण नहीं हैं बल्कि इनका प्रयोग विधान–मण्डलों तथा बाजारों में समान रूप से हो सकता हैं। गांधी के अनुसार अनशन करना अहिंसा का पालन करने वाले के शस्त्रागार का अन्तिम शस्त्र हैं। अहिंसा को सर्वश्रेष्ठ गुण मानने के दो और महत्वपूर्ण कारण हैं :– प्रथम तो यह कि प्राणीमात्र के प्रति हम चाहे जो भी कुछ करना चाहे अहिंसा सबसे मूल में हैं। हम किसी के प्रति अपना कोई भी कर्तव्य पालन तभी कर सकते हैं जब कि वह जीवित हैं। दूसरी बात यह प्रेम रूप अहिंसा सभी सद्गुणों की

जननी हैं। गांधी का अनुभव था कि मानवीय संबंधो की सभी समस्याओं का हल अहिंसा ही हैं, अहिंसा हिंसा से अधिक केवल एक दर्शन नहीं हैं बल्कि कार्य करने की एक पद्धति है, हृदय परिवर्तन का साधन हैं। अहिंसा और घृणा दोनों हमारे हृदय में साथ–साथ नहीं रह सकते। इसलिए गांधी के असहयोग आन्दोलन के मूल में जिनके प्रति असहयोग किया जाता था, उनके लिए घृणा नहीं बल्कि प्रेम ही था। यह अहिंसा की भावात्मक व्याख्या हैं जिसमें भगवान बुद्ध की मैत्री और करूणा, महावीर की मैत्री, करूणा, प्रमोद एवं माध्यस्थ और हिन्दू धर्म की जीव दया की भावनाएँ हैं। इसी को ईसामसीह ने भी अपनी भाषा में कहा दुश्मनों से प्यार करो।6/ उपनिषद् गीता तथा अन्य हिन्दू शास्त्रों में सभी जीवों में आत्मा का निवास बताया गया हैं और इसलिए हिंसा अधर्म हैं। अहिंसा न केवल व्यक्तिगत जीवन का बल्कि समाज का नियम हैं। प्रेम रूप में अहिंसा अन्य सभी सद्‌गुणों की जननी हैं प्रेम से ही करूणा, सहानुभूति, सहिष्णुता, परोपकार, दया आदि गुणों को जन्म मिलता हैं। इसलिए गांधीजी ने कहा था कि अहिंसा के बिना सत्य की भी साधना संभव नहीं हैं।7/ ईश्वर प्रेम वास्तव में मानव प्रेम ही हैं क्योंकि मानव भी उसी ईश्वर की कृति हैं और उसी का अंश हैं।8/अहिंसा के सिद्धान्त को प्रयुक्त करने का अर्थ होगा, हर प्रकार के अन्याय, दमन, शोषण और उत्पीड़न का निजी और सामूहिक रूप से अहिंसक प्रतिकार।

गांधी के अनुसार अहिंसा की उत्कृष्टतम अभिव्यक्ति, एक दोषमुक्त सामाजिक व्यवस्था के निर्माण के संकल्प के रूप में होती हैं। उनके अनुसार अहिंसा का अर्थ केवल हत्या न करना ही नहीं है, वरन् अहिंसा से उनका तात्पर्य अन्य किसी प्रकार से भी अपने विरोधी को कष्ट न पहुँचाना है। मार्च, 1920 के यंग इण्डिया के अंक में गांधी ने लिखा था कि पूर्ण अहिंसा सभी प्राणियों के प्रति दुर्भावना के अभाव का नाम हैं। इस प्रकार अहिंसा अपने क्रियात्मक रूप में सभी जीवधारियों के प्रति सद्भावना का नाम है। यह तो विशुद्ध प्रेम है। उनका दृढ़ विश्वास था कि मनुष्य और समाज की स्थिति में रक्तपूर्ण क्रान्ति के आधार पर नहीं वरन् अहिंसात्मक पद्धति के आधार पर ही सुधार संभव है। उनका विश्वास था कि प्रत्येक मनुष्य में चैतन्य शक्ति होती है और नैतिक प्रभाव द्वारा इस चैतन्य शक्ति को जागृत करके उसका हृदय परिवर्तन किया जा सकता है। गांधी अहिंसा से आध्यात्मिक बल पाते थे और उनका विश्वास था कि अहिंसा में कठोर हृदय को भी पिघलाने की शक्ति होती है। अहिंसा आत्मिक बल की प्रतीक हैं, जिसके विरोध में भौतिक बल चाहे कुछ समय के लिए विजयी हो जाए, किन्तु अन्ततः उसे पराजित होना ही पड़ेगा।

गांधी के अनुसार अहिंसा वीरों का धर्म है और अपनी कायरता को अहिंसा की ओट में छिपाना निन्दनीय तथा घृणित हैं। यदि कायरता और अहिंसा में से किसी एक का चुनाव करना हो तो गांधी हिंसा को स्वीकार करते हैं। इस संबंध में उनका यह स्पष्ट विचार है कि यदि हमारे हृदय में हिंसा भरी है तो हम अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए अहिंसा का आवरण पहने, इससे अधिक हिंसक होना अधिक अच्छा है। वस्तुतः गांधी कायरता के पक्ष में कतई नहीं थे। गांधी का विचार था कि मानव स्वभाव से ही अहिंसावादी है। इतिहास के आदिकाल से लेकर आजतक युग पर दृष्टिपात करें तो देखेंगे कि मनुष्य धीरे–धीरे निरंतर अहिंसा की ओर अग्रसर हो रहा है। यदि ऐसा नहीं होता तो सृष्टि के अनेक प्राणियों की तरह मानव का अस्तित्व भी अब तक समाप्त हो चुका होता।9/

अहिंसा ही गांधी का अभेद्य शस्त्र है, इसलिये वे कहते है कि यदि सच्ची शान्ति चाहते हो और युद्धों को समाप्त करना चाहते हो तो अहिंसा को अपनाओं क्योंकि अहिंसक व्यक्ति के लिये सारा जगत कुटुम्ब है जो ऐसा मानता है कि वह किससे डरेगा और किसे डरायेगा। हिटलर शक्ति को हिटलरशाही के तरीको से कभी परास्त नहीं किया जा सकता है, उसे तो इससे ऊँचे शस्त्र से ही परास्त किया जा सकता है और वह है अहिंसात्मक प्रतिरोध।10/ इस प्रकार गांधीवादी अहिंसा को कायरता की संज्ञा देना नितान्त अनुचित है। यह कायरता की पलायनवादी प्रवृत्ति की परिचायक नहीं, वरन् आत्मिक बल के रूप में वीरों का वास्तविक भूषण हैं। यदि सार रूप में कहा जाये तो सचमुच सत्य और अहिंसा जैसे नैतिक मूल्यों का तात्कालिक सामाजिक समस्याओं के समाधान के प्रयोग का नाम गांधीवाद है।11/ गांधीवाद के सारे विचार एवं आचार सत्य एवं अहिंसा की शह पर ही आगे बढ़ते हैं।12/ अतः अहिंसा एक जीवन शैली है जिसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लागू किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. गोपीनाथ धवन – सर्वोदय तत्व दर्शन, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद 16 अगस्त, 1963 पृ. 68 2. हरिजन, 17 अगस्त, 1934 3. हरिजन,19 दिसम्बर, 1936 4. टाईम्स ऑफ इण्डिया 8.5.1941 (बंबई से प्रकाशित दैनिक समाचार पत्र) 5.हरिजन 1 सितम्बर, 1940 6. ईशाचास्य उपनिषद्–6 7. बापू के आर्शीवाद, यंग इण्डिया, 31 दिसम्बर, 1931, पृ. 6 8. धीरेन्द्र मोहनदत्त, उपरिवत, हरिजन, 29 अगस्त 1936, पृ. 103 9. महात्मा गांधी का संदेश संपादन और संकलन–यू.एस. मोहन रॉय निर्देशक प्रकाशन विभाग, पटियाला हाऊस, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित और टुडे एण्ड टुमारोज प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स फरीदाबाद द्वारा मुद्रित, 2 अक्टुबर, 1962, पृ. 28 10. काका कालेलकर– सत्याग्रह विचार और युद्ध नीति, पृ. 47, सर्व सेवा संघ प्रकाशन राजघाट, वाराणसी अप्रैल, 1965, पृ. 47 11. नम्बूदरीपाद, ई.एम.एस.– जैम डींजउं ।दक जैम ै्ड, पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस, न्यू देहली 1959, पृ. 112–113 12. उपरोक्त पृ. 120